

Shri Hanumana Puja

Date : 31st March 1999
Place : Pune
Type : Puja
Speech : Hindi
Language

CONTENTS

I Transcript

Hindi	02 - 11
English	-
Marathi	-

II Translation

English	-
Hindi	-
Marathi	12 - 15

ORIGINAL TRANSCRIPT

HINDI TALK

Scanned from Hindi Chaitanya Lahari

आज हम लोग श्री हनुमान जी की जयन्ती मना रहे हैं। हनुमान जी के बारे में क्या कहें कि वो जितने शक्तिवान थे जितने गुणवान थे उतने ही वो श्रद्धामय और भक्तिमय थे। अधिकतर, ऐसा मनुष्य जो बहुत शक्तिवान हो जाता है, बहुत बलवान हो जाता है वह right sided हो जाता है। वह अपने को इतना ऊँचा समझता है कि वो अपने आगे किसी को भी नहीं मानता। पर हनुमान जी एक विशेष देवता हैं, एक विशेष गुणधारी देवता। जितने वे बलवान थे उतनी ही उनकी भक्ति शक्ति के सन्तुलन में थी। इतनी उनकी अन्दर जो शक्ति भक्ति थी ये सन्तुलन उन्होंने किस प्रकार पाया और उसमें रहे थे, एक वही समझने की बात है। जिस प्रकार अब हम सहजयोग में पार हो जाते हैं और सहजयोग में हमारे पास अनेक विद् शक्तियाँ आ जाती हैं उसी के हिसाब से हमें सन्तुलन रखना पड़ता है। हम प्यार करते हैं और प्यार के सहारे, प्यार की शक्ति के सहारे हम अपने कार्य में रत रहते हैं और वो कार्य करते रहते हैं। इसी प्रकार श्री हनुमान जी अत्यन्त शक्तिशाली थे और इनके अन्दर दैवी शक्तियाँ, नवधा दैवी शक्तियाँ थीं-जिसे कहते हैं गरिमा, लघुमा वे चाहे जितना बड़े हो सकते थे, अणिमा छोटे बिल्कुल-बिल्कुल बारीक हो सकते थे। ये सारी शक्तियाँ जो भी पा लेता था वो पागल हो जाता था। दोनों के बीच में जो मध्य मार्ग है उस चीज को पाना है। जिसे आप शक्ति कहिए चाहे भक्ति कहिए। उनके शरीर का अंग-2 उसी से भरा रहता है। उनकी इसी विशेषता के कारण आज हम बजरंगवली की देश-विदेश में भी अर्चना करते हैं। मुझे आश्चर्य लगता है कि परदेश में जो छोटे लड़के हैं, छोटे बच्चे हैं, वो कोई सा

भी चित्र बनाते हैं तो पहले हनुमान जी का ही चित्र बनाते हैं। फिर दूसरी उनकी विशेष बात ये है वे अर्ध मनुष्य थे अर्ध बन्दर थे। माने पशु और मानव का बड़ा अच्छा मिश्रण था। तो हमारे अन्दर जो कुछ भी हमने अपने उत्क्रान्ति में, अपने Evolution में पीछे छोड़ा है उसमें भी जो प्रेम और उसमें भी जो आसक्ति थी वो उन्होंने अपने साथ ले ली थी। जैसे कि आप देखते हैं इन गुरुओं का जो मार्ग माना जाता है जिसमें कि गुरु के बहुत से प्राणी होते हैं, सेवक माने जाते हैं सो कुत्ते को मानते हैं। कुत्ते में वो विशेषता है कि गुरु के जैसे एक साधक पूर्णतः समर्पित होता है और गुरु के सिवा उसका और कोई मालिक नहीं होता। कोई और उसका विचार नहीं होता। हर समय वो अपनी जान लगा देता है अपने मालिक के लिए। इस प्रकार समझना चाहिए कि एक प्राणी जो कि उत्क्रान्ति में बड़ा हुआ है जब वो मनुष्य के सानिध्य में आता है तो वो क्या सीखता है? परम भक्ति। इसका मतलब है भक्ति हमारे अन्दर जन्मतः बनी हुई है। पूर्णतया पहले ही से हमारे अन्दर भक्ति का बीज बोया हुआ है। हम लोग इस दशा में नहीं थे, मानव दशा में नहीं थे तब हमारे अन्दर भक्ति का उद्भव बहुत हो गया; भक्ति पूरी तरह से हमारे अन्दर समा गई। आप किसी भी जानवर को ले लें, उसे आप स्नेह दें, जरा सा स्नेह दें, जरा सा आप प्यार दें तो वो इस तरह से आपके निकट हो जाता है, इस तरह आपको मानता है और इस तरह आपसे प्यार करता है। घोड़े की भी बात आपने सुनी होगी। घोड़े से जब सवार गिर जाता है जब वो मरने को होता है तो वो उसके ऊपर छा जाता है। इसी प्रकार अनेक हाथियों के बारे में बताया था कि ये

हाथियों की निष्ठा भी कमाल की है। वो अपने मालिक को कभी कोई तकलीफ नहीं देता। उनके मालिक पर गर कोई शेर या ऐसा जानवर हमला करे तो हाथी उससे लड़ते-2 मर जाएगा पर अपने मालिक को हाथ नहीं लगाने देगा। ये जो रिश्ता एक मालिक का और ऊँचे पहुँचे हुए जानवर का है ये रिश्ता भी हमारे अन्दर स्थित है। पहले उसे बनाओ और इस रिश्ते के साथ जो शक्ति भी हमको मिली है। पहले जैसे मैंने बताया कि हाथी लड़ते-2 मर जाएगा, तो लड़ने की शक्ति हाथी के अन्दर भी इसलिए है कि उसके अन्दर प्यार व भक्ति है। हम लोग कहते हैं कि सहजयोग प्यार का, परमेश्वरी प्रेम का कार्य है। बात सही है, पर इसी कार्य को करते वक्त उसमें शक्ति भी निहित है। हम लोग उसको शायद जाने या न जाने हमें उसमें प्रचीती हो या न हो, वो उसी के साथ निहित है और वो शक्ति, दैवी शक्ति मनुष्य का किसी के प्रति नतमस्तक होना, किसी को मान लेना, किसी को बड़ा समझ लेना ये सब उसी के लक्षण हैं। किन्तु वो जब गुरु मान लेता है तो उसके अन्दर गुरु की महिमा तो होती है पर उसके साथ-साथ उसकी शक्ति भी होती है। तो भक्ति और शक्ति दो अलग चीजें नहीं हैं एक ही हैं। हम ये कहेंगे कि गर (Right Hand) में गर शक्ति है तो (Left Hand) में भक्ति। ये शक्ति-भक्ति का संगम, ये हनुमानजी में बहुत है। सीता जी ने कहा, तुम तो मेरे बेटे हो। मैं बेटे के बल पर नहीं आऊंगी। मेरे प्रति को आना होगा और इस आदमी का संहार करना होगा। जब वो इसको नष्ट करेंगे तब मैं उनके साथ जाऊँगी। तो हनुमान जी पेड़ पर बैठ गए। उन्होंने कहा ठीक है। वो तो आपको ऐसे ही उठाकर ले आते, उनकी शक्तियाँ ही ऐसी थीं। लेकिन उन्होंने कहा कि जब माँ ये बात कह रही हैं, ठीक है। और उसके बाद इतना बड़ा महायुद्ध हुआ। उसकी जरूरत

थी। अब ये जो श्री राम के जो विशेष गुण अत्यन्त शक्तिशाली और उनका निशाना कभी चूकता नहीं था। आपने सुना होगा कि सीता-स्वयंवर में उन्होंने क्या किया? लेकिन वही श्री राम जब रावण की बात आई तो उसको उन्होंने छोड़ा नहीं। उसका उन्होंने वध कर दिया। उनके धनुष का वर्णन तुलसीदास ने बहुत सुन्दर किया है श्रीराम बार-बार बाण मार रहे हैं और रावण के दस सिर में से एक एक गिरता जाए, फिर आए जाए, तो लक्ष्मण ने कहा कि कर क्या रहे हैं आप? एक बाण उसके हृदय में मारो। जैसे ही हृदय में बाण मारोगे वैसे ही वो मर जाएगा, नहीं तो वो मरेगा कैसे? वो नहीं मर सकता उसका वो बाण जो है वो उसके हृदय में लगाओ। अब श्री राम का बड़ा सुन्दर वर्णन है वहाँ। संकोची थे न बहुत संकोची। श्री राम जो थे इतने शक्ति के प्रचण्ड महान पुरुष होते हुए भी उन्होंने कहा, देखो, बात ये है कि इस रावण के हृदय में मेरी सीता का वास है। तो मैं हृदय में नहीं मारूँगा। लेकिन ये बार-बार इसका सिर उतरेगा तो इसका ध्यान जरूर मेरे सिर की ओर जाएगा। उस वक्त मैं इसको बाण से मारूँगा। नहीं तो उनके लिए ये कहा जाता है कि एक बाण में वो वध करते थे। पर अब ये देखिए कि कितनी नजाकत की बात है, कितनी सरलता की बात है, पति का प्रेम अपनी पत्नी के प्रति। सारी शक्ति के सागर होते हुए भी उनके अन्दर किस कदर प्रेम था।

हनुमान जी के तो अनेक किस्से हैं कि जिसमें हनुमान जी ने सिद्ध कर दिया कि वो प्रेम का सागर हैं। और उसी वक्त जो दुष्ट हो, जो दूसरों को सताता हो, जो दूसरों को नष्ट करता हो उसका वध करने में उनको बिल्कुल किसी तरह का संकोच नहीं होता था। ये जो भक्ति की बात बजरंग बली की है वहीं उनकी शक्ति की भी बात देखने लायक है। वो जानते थे कि रावण

सिर्फ अग्नि से डरता है। इसलिए लंका में गए और लंका दहन कर दिया। ये उनकी शक्ति की बात थी कि उन्होंने लंका दहन कर दिया और उस दहन में किसी को मारा नहीं, किसी को जलाया नहीं, रावण भी जला नहीं, कोई नहीं जला पर उसे दहशत हो गई। वे घबरा गए कि रावण ये क्या पाप कर रहा है। रावण जो इस तरह के कार्य कर रहा था, पहले लोगों में सम्मत था। वो कहते थे ये रावण ही है, क्या है, इसकी इच्छा जो है सो है। इसको जो करना है सो करने दो। हम उसको कहने वाले कौन होते हैं, रावण तो रावण ही है। लेकिन जब, कितनी समझदारी की बात है कि जब लंका जल उठी, जब लंका का दहन हो गया तब लोग समझ गए कि ये तो बड़ी खतरनाक बात है, बड़ी घबराने की बात है। क्योंकि लंका का दहन हो गया और हम लोग गर जल गए होते तो अब आग की विशेषता ये है कि ऊपर जाती है, नीचे नहीं आती है। सब लोग नीचे से ऊपर देख रहे थे कि जल रही है, जल रही है, जल रही है। पूरा लंका दहन हो गया लेकिन कोई जला नहीं। ये डराने के लिए, उनको समझाने के लिए कि रावण महापाप कर रहा है, उन्होंने ये काम किया। कितनी समझदारी और कितना सन्तुलन बजरंग बली में था ये देखना है। यही हम देखते हैं। इतिहास में भी इतने लोग शक्तिशाली बहुत थे, उनमें अत्यन्त प्रेम था। गर आप देख लीजिए तो शिवाजी महाराज का एक उदाहरण है कि वे इतने शक्तिशाली थे और उतने ही तमीजदार, बहुत कायदे के और बहुत ही ज्यादा संयमी आदमी थे। ये सन्तुलन जब आपमें आ गया तब आप सहजयोगी हैं। गर आपके अन्दर शक्ति आ गई, इसका मतलब ये नहीं कि आप अपने प्रेम और व्यवहार किसी तरह से त्याग दें। किन्तु आप शक्तिशाली हैं उसकी शोभा ही ये है कि आप जो लोग दलित हैं, जो गरीब हैं, जो दुखी हैं, जो पीड़ित हैं, जिन

पर आफ़त आई हुई है, उनके संरक्षण में है। और जो लोग उनको पीड़ा देते हैं, जो नाश करते हैं, जो सताते हैं और जिन्होंने हर तरह की परेशानी इन लोगों के लिए खड़ी की है ऐसे लोगों को, आप को कुछ करने की जरूरत नहीं, सिर्फ बन्धन से ही आप ठिकाने लगा देंगे। ये जो आपके अन्दर शक्तियाँ आ गई हैं; इसका इस्तेमाल इसीलिए करना चाहिए कि जिससे जो दुष्ट हैं वो खत्म हो जाए। लेकिन आपकी शक्ति में हाथ में तलवार या गदा नहीं हनुमान जी जैसे, बाह्य में गदा नहीं है पर अन्तर में है। आपके अनुभव आप देख लीजिए कि जो आदमी परेशान करता है, तंग करता है उस पर गदा प्रहार हो जाता है। चाहे आप हाथ में गदा उठाए या नहीं उठाए। इस तरह से आप तो स्वयं सुरक्षित हैं ही, आपकी तो सुरक्षा है ही। लेकिन उसके साथ ही साथ आपके जो दूसरे सहजयोगी हैं उनकी भी सुरक्षा है। इस तरह से बचत हो जाती है। अब इसमें भी बजरंग बली का हाथ बड़ा जबरदस्त है। आपको पता नहीं कि वो आपके आगे पीछे खड़े हुए हैं। है तो उनका स्वभाव बच्चों जैसा बहुत निर्मल और बहुत सरल लेकिन इतनी समझदारी और हर तरह की खुबियाँ वो जानते हैं। इसका मतलब है कि उनकी शक्ति के साथ उनके अन्दर निराक्षर विवेक बहुत है। बड़े बुद्धिमान थे। आजकल की बुद्धि तो बिल्कुल बेकार है। पर वो बुद्धि जो प्रेम से हरेक चीज़ को जाँचे और समझे उस बुद्धि के एक विशेष स्वरूप श्री गणेश थे और श्री हनुमान हैं। दोनों में विशेषता ऐसी है कि हनुमान जी बहुत बलिष्ठ, बहुत तेज ऐसे देवता हैं और श्री गणेश ठण्डे हैं। लेकिन दोनों जब वक्त पड़ता है तो बहुत बड़े संहारक। सहजयोगियों को संहार करने की जरूरत नहीं। किसी का संहार करने की जरूरत नहीं। बस, आप ये सोच लीजिए कि आपके साथ ये दोनों हर पल, हर क्षण हैं जब भी आपको कोई

परेशान करें, तंग करें तो साक्षात् आपके संरक्षक आपके साथ खड़े हैं। बहुत सी बार आप सुनते होंगे कि ये मिनिस्टर लोग जाते हैं। कोई जाता है तो उनके साथ सिक्कूरिटी चलती है। सहजयोगियों की सिक्कूरिटी उनके साथ ही चलती है। और दूसरी तरफ सिक्कूरिटी जो चलती है वो गणों की। अभी उनका तो कार्य बहुत ज्यादा है, विविध है, तरह तरह के, छोटे-छोटे काम भी करते हैं। और ये ही हैं श्री गणेश को, वो गणपति हैं। उनको सब खबर देते हैं आपके बारे में, क्या हो रहा है? कहाँ गड़बड़ हो रही है? कहाँ से आक्रमण हो रहा है? कहाँ से आपको तकलीफ हो रही है? आप जानते भी नहीं होंगे। कोई अज्ञात रूप से भी कुछ आपके ऊपर में हमला करना चाहे। तो भी ये दोनों देवता आपके साथ खड़े हुए हैं। और जब गणपति ये बात बता देते हैं तो श्री हनुमान उस पर जुट जाते हैं। तो सहजयोगियों को डरने की कोई जरूरत ही नहीं है। किसी भी चीज से डरने की जरूरत नहीं है। अभी एक किस्सा आपको सुनाऊँ मैं, बड़ा आश्चर्य का है। आपने सुना होगा कि अमेरिका ने हर जगह बहुत सारे बम गिराए ये सोच के कि इस जगह कुछ आक्रामक लोगों ने कुछ व्यवस्था की हुई है। तो ये किस्सा जो मैं आपको सुना रही हूँ वो ये अफ्रीका में एक जगह, जहाँ पर कुछ सहजयोगी थे और वहाँ बम गिरा, वो बम गिरने से वहाँ के जितने भी लोग थे, सब मर गए पर सहजयोगियों को कुछ भी नहीं हुआ। वो बड़े हैरान, उनके ऊपर धूल भी नहीं आई। कभी वो कबैला नहीं आए थे, कभी उन्होंने सोचा नहीं था कि कबैला आएंगे। पर जब ये हुआ तो कबैला आए और आके बताया, माँ पता नहीं किसने हमें बचा लिया। किसने हमारी रक्षा की। लेकिन हम सारे सहजयोगी बच गए बाकी सब लोग मर गए। अब ये वाक्या है, सही बात है। और इसका कारण ये है कि आपने अब परमात्मा को स्वीकार्य

कर लिया है। आपने सहज मार्ग से अपना आत्मा चेतित कर लिया है। इस आपके नए परिवर्तन से आप एक महान भक्त और शक्तिपूर्ण ऐसे इन्सान हो गए। अब किसी को मजाल नहीं कि आपको छू ले। ऐसे हजारों उदाहरण आपको मैं दे सकती हूँ कि जब आप सहज में पार हो गए, तो आपको कोई भी नहीं छू सकता। पहले भी सन्त साधु थे। सबको सताया गया, सबको छला गया, सब कुछ हुआ। पर जितना भी लोगों ने छला या सताया वो डिगे नहीं। और इतना ही नहीं उनका हमेशा संरक्षण हुआ। और ऐसी-ऐसी बातें वो कहते थे कि जिससे लोग बहुत नाराज हो जाएं। सोचते थे कि ये क्या बातें कह रहे हैं। राजाओं के खिलाफ, राक्षसों के खिलाफ, सबके खिलाफ, वो ऐसी बातें कहते थे जिनसे लोग घबरा जाएं। पर हनुमान जी की शक्ति से उनको कोई नहीं छू सका, उनको किसी ने नहीं मारा। ख्वाजा निजामुद्दीन साहब के बारे में एक बड़ा अच्छा किस्सा है कि उनसे उनके बादशाह ने कहा कि तुम आकर के मेरे सामने झुको, घुटने साफ करो। उन्होंने कहा नहीं, मैं आपके सामने नहीं झुकने वाला। आप कौन होते हैं? बहुत नाराज हुए। उसने कहा कि गार तीन दिन के अन्दर आपने मेरे सामने सिर नहीं झुकाया तो मैं आपको गर्दन कटवा दूंगा। उन्होंने कहा कटवा दो। मैं नहीं झुकूंगा क्योंकि आप कोई बड़े साधु-सन्त नहीं जो आपके सामने मैं झुकूँ। तो उन्होंने आकर के बड़ा ही हंगामा मचाया कि तीन दिन बाद जाकर के इस आदमी की गर्दन काटनी है। जिस दिन उस गुरु की गर्दन काटने वाले थे, उसी रात इसी बादशाह की गर्दन कट गई। कैसे पता नहीं? गार ऐसे इतिहास में न होता तो जो बड़े-बड़े साधु-सन्त हो गए, जो बड़े-बड़े धर्मवीर हो गए वो खत्म हो जाते, क्योंकि राष्ट्र की प्रभूतियाँ इतनी ज्यादा बलवती हैं इतनी हिंसक हैं और इतनी व्यापक हैं कि वो इन लोगों को तो खत्म

कर ही देती। किन्तु उनके पीछे परमात्मा है और परमात्मा जो है वो एक तरफ हनुमान और दूसरी तरफ गणेश, ये दो शक्तियाँ मिलकर कं बना हैं। तो संरक्षण वो संभालते हैं। राणा प्रताप रचयिता हैं मेवाड़ के, वो जब लड़ाई में गए तो उनके सैनिकों ने सोचा कि भई ये तो हारने वाले हैं तो उनसे कहने लगे आप वापिस जाइए क्योंकि हम चाहते हैं आप बच जाएं, मेवाड़ के लिए। उन्होंने कहा नहीं तुम लोग सब वापिस जाओ। मैं तो ऐसे ही डटा रहूंगा क्योंकि गण मेरे साथ खड़े हुए हैं। सहजयोगी थे न वो भी। आप को जाना है तो आप लोग जाइए मैं तो ऐसे ही डट के खड़ा रहूंगा क्योंकि गण मेरे साथ हैं। बस समझ लीजिए कि आपके आगे-पीछे हर तरह के संरक्षण हैं। पर इस संरक्षण के मिलते ही मनुष्य में क्या होना चाहिए? सहजयोगी में क्या होना चाहिए? वो धीर, गम्भीर और किसी से डरने वाला इन्सान नहीं होना चाहिए। वो किसी से भागता नहीं, जम जाता है उस जगह। और जो कुछ दुष्ट आदमी हैं उसके सामने डट जाता है। उसको कुछ करने की जरूरत नहीं। वो जमाना गया अब। अब तो आप सिर्फ खड़े हो जाएं, वो दूसरा भाग जाएगा, उसको पता नहीं चलेगा क्या हो रहा है? ऐसे अनेक-अनेक अनुभव सहजयोगी मुझे लिख कर भेजते हैं कि माँ ऐसा हुआ, वैसा हुआ, ये बात हुई। नहीं तो इस परदेसी लोगों के सामने सहजयोग फैलाना कोई आसान चीज नहीं है। और मुसलमानों में भी जब अब सहजयोग फैलने लग गया तो इससे आप समझ सकते हैं कि दैवी शक्ति जो प्रेम की शक्ति है उसके अन्दर कितनी ताकत है और उससे कितने कार्य हो सकते हैं। पर इसका मतलब नहीं कि आप हनुमान जी के नाम पर कोई बड़ी उत्पीड़न तैयार करें। ये इनका बिल्कुल मतलब नहीं। जैसे आजकल बने हुए हैं- हनुमान जी का नाम ले लो, गणेश जी का नाम ले लो और नहीं तो महादेव जी

का नाम ले लो और ऐसी-ऐसी संस्थाएं बनाओ। कोई संस्था बनाने की जरूरत नहीं आप स्वयं ही एक संस्था हैं। न तो आपको कोई छू सकता है और न तो कोई आपको नष्ट कर सकता है।

एक अपने को समझने की बात है जो कि सब शास्त्रों में कहा है कि आत्मसाक्षात्कार का मतलब है-अपने को जानना। अपने को जानना माने क्या? जानने का मतलब है कि ये जानिए कि आपके आगे-पीछे कौन-कौन खड़ा है? कौन-कौन आपका रक्षक है? और जो आपको लोगों से प्यार है और दुलार है और जो लोगों के प्रति जो हर समय ये सोचते हैं कि इनको मैं किस तरह से खुश करूंगा जैसे कि सारे संसार को मैं सुखी करूंगा, सबको मैं आनन्द से भर दूंगा। ये जो भावना आपके अन्दर आती है उसमें सोचना चाहिए आपका कोई भी बिगाड़ने वाला नहीं बैठा हुआ। हिम्मत नहीं है। कोई भी बिगाड़ेगा और उसके लिए आपको कुछ करना नहीं है। उसके लिए आपको कोई तलवार रखने की जरूरत नहीं, गदा रखने की जरूरत नहीं है। वो तो सब है ही वो पहले से ही बन बून के आए हुए हैं। और वो आपमें समाए हुए हैं। आपको जरूरत ही नहीं है कि आप अपने को बलिष्ठ बनाएं, आप हैं। एक चाइनीस किस्सा है, बहुत मजेदार। कि उनके यहाँ मुर्गों की लड़ाई होती है। तो अब मुर्गों की लड़ाई होती है तो उसमें ये हो गया कि किसी तरह से एक राजा को ऐसा लगा कि किसी साधू के पास ले जाएं। तो ये मुर्गें जो हैं साधू से सीख लें कि दुनिया से कैसे लड़ना चाहिए। क्योंकि ये साधू किसी से लड़ता नहीं पर उसको कोई छूता भी नहीं। उससे लोग दूर ही भागते हैं और उसकी तरफ नतमस्तक रहते हैं। तो ऐसी कौन सी इसमें बात है कि ये इस तरह से इस दुष्ट दुनिया में इस तरह से रह रहे हैं। तो साधू ने कहा कि अच्छा तुम मुर्गों को छोड़ जाओ। तो एक मुर्गा उसके पास

वो छोड़कर चले गए। एक महीने बाद वो मुर्गे को ले गए और उसको जहाँ लड़ाई हो रही थी, बहुत सारे मुर्गे जिसमें थे, ऐसे प्रांगण में ले जाकर छोड़ दिया। तो अब मुर्गे जो ये महाराज थे ये अपने खड़े रह गए। अब सब मुर्गे आपस में लड़ रहे हैं, झगड़ रहे हैं, ये कर रहे हैं, वो कर रहे हैं। एक बाद एक, एक बाद एक, सब निकल गए। बस एक ये महाशय खड़े रहे। सब लोग इनसे डरने लग गए कि इनको तो कुछ हो ही नहीं रहा है। ये कोई विशेष हैं कि क्या? और आखिर में वो ही एक मुर्गा बचा रहा जो अपनी शान में खड़ा हुआ था।

सो आज हम हनुमान जी की यहाँ पूजा कर रहे हैं। तो सोचना चाहिए कि हनुमान जी साक्षात् हमारे अन्दर बस गए हैं। वो हमारे right side में हैं, माने पिंगला नाड़ी पर काम करते हैं और हमारे अन्दर जोश भरते हैं, और उससे उष्णता भी आती है इन्सान में। पर उनका मार्ग ऐसा है कि आपके अन्दर उष्णता भी आए और भक्ति भी साथ-साथ चले। सो जो वो उष्णता आती है जो जोश आता है वो हमारे अन्दर right side में काम करता है। और जब हम हनुमान जी की सन्तुलन शक्ति को प्राप्त नहीं करते हैं तो हमारे यहाँ अनेक बीमारियाँ आ जाती हैं जैसे लीवर की बीमारी है, अस्थमा की बीमारी है और यहाँ तक Heart Attack कहना चाहिए आता है। जब इनकी गर्मी नीचे की तरफ जाती है, हनुमान जी गर्मी को कंट्रोल करते हैं पर जब गर्मी कंट्रोल नहीं होती है तो ऐसी-ऐसी बीमारियाँ होती हैं कि जिनका कोई इलाज नहीं। Blood Cancer हो सकता है इससे और Intestine trouble हो सकता है। माने दुनिया भर की बीमारियाँ एक लीवर की खराबी से होती हैं और लीवर की खराबी होती है क्योंकि हम हनुमान जी की बात नहीं मानते। माने कभी गार हमें गुस्सा आए कोई जरूरत नहीं है

गुस्सा आने का। पर आया गुस्सा, लगे मारने-पीटने, इसको उसको हंगामा करने। ये कोई न हनुमान जी की शक्ति है? कोई गुस्सा करने की बात ही नहीं है। किसी से नाराज होने की बात ही नहीं है। जरूरत ही नहीं है। गार आप हनुमान जी को मानते हैं तो वो किसी पर गुस्सा नहीं करते। लेकिन इन्सान है हर बात पर गुस्सा आ सकता है। अहंकार चढ़ता है उसके अन्दर। हनुमान जी में जरा भी अहंकार नहीं था। Right Sided आदमी में बहुत अहंकार होता है। मनुष्य में तो इतना अहंकार है अरे बाप रे! अरे बाप रे! मेरा तो जी घबराने लगता है। जब देखती हूँ उनको किस चीज का अहंकार था। उस अहंकारिता का कोई आर्थ ही नहीं है। फिर 'हम' माने क्या? कोई एक सर्वसाधारण मनुष्य भी अहंकार करता है और बहुत से राजे-महाराजे भी अहंकार नहीं करते। इसका कारण है- उनके अंदर ही कोई ऐसी स्थिति बनी है कि वो हनुमान जी को नहीं मानते। जैसे ही आप हनुमान जी को मानते हैं-वैसे ही आप श्री राम जी को मानते हैं। अब बताइए कि गार आप right sided आदमी नहीं हैं तो आपको तो अस्थमा होना नहीं चाहिए क्योंकि श्री राम का वास हमारे सहजयोग के हिसाब से right heart पर है। क्योंकि आप हनुमान जी को नहीं मानते हैं। उनके तरह का आपका व्यवहार नहीं है, सन्तुलन नहीं है इसलिए आपको अस्थमा भी हो जाता है। हृदय में आपके शिवाजी का स्थान है। वो भी, वोही गड़बड़ हो जाता है और आपको Heart attack आ सकता है या आपको और बीमारियाँ हो सकती हैं। सहजयोग में आने पर आपको समझना चाहिए कि हनुमान जी का आपके सामने एक आदर्श है, गणेश जी का है ही, वो तो अवोधिता थे। बिल्कुल अवतार जैसे छोटे बच्चे होते हैं। वैसे ही भोले भाले लेकिन बुद्धि के बहुत चाणाक्ष और हनुमान जी के अन्दर एक सन्तुलन,

एक प्यार भरा आनन्द और उसी के साथ-साथ शक्ति दर्शन। ये सब चीजों को समझते हुए एक सहजयोगी का चरित्र या उसका जीवन ऐसा होना चाहिए कि सन्तुलित। आपको जब गुस्सा भी आता है, तो आप चुप होकर देखिए। मुझे मेरे ख्याल से, मुझे तो कभी गुस्सा नहीं आता या आता भी होगा तो मुझे तो पता नहीं और बाँर गुस्सा किए ही मामला ठीक हो जाता है। मैं कहूँगी जरूर कि भई ये क्या कर रहे हो? बस ज्यादा नहीं, इससे आगे नहीं। और लोग तो गाली-गलोंच दुनिया भर की चीजें करते हैं। पर जब ये अति हो जाता है जब ये गुस्सा करने का मादा अति हो जाता है और आदमी वो तो बड़े गुसैल बैठे हुए हैं, वो वहाँ बैठे हैं, गुस्से करके बैठे हैं, जो गुस्सा कर रहे हैं। इस तरह से जब आदमी हो जाते हैं तो एक गम्भीर बात होती है, एक बड़ी गम्भीर बीमारी उनको लगती है, उनको अल्जाइमर कहते हैं। अल्जाइमर की बीमारी, इस गुस्से से होती है। वो गुस्सा जो हम बेकार में कर रहे हैं।

अब समझ लीजिए, आपके लड़के को किसी ने थप्पड़ मार दिया। हो गए आप गुस्से; गुस्सा होने से क्या बात होती है? उल्टे सोचना चाहिए कि हमारे लड़के की कोई गलती है या हम जबरदस्ती अपने प्यार में उस लड़के को खराब कर रहे हैं। इस तरह का तन्तुलन जीवन में नहीं आएगा, तो ये अल्जाइमर की बीमारी बहुत ही खराब होती है। इसमें आदमी पगला सा जाता है। मरता नहीं है और किसी को मरने भी नहीं देता। गालियाँ देता है, चीखते रहता है, उसका इलाज है सहजयोग में पर बड़ा कठिन है क्योंकि वो तो गालियाँ देते बैठते हैं। उसको जो ठीक करने जाएगा, उसको ही गालियाँ देंगे तो कौन, गुर कोई डॉक्टर हो तो उसको कोई गाली दे तो कहेगा जा चूल्हे में और मुझे क्या करने का है। यही होता

है उनके साथ कि नहीं चाहिए, माँ हमको इनको ठीक करना ही नहीं, जाओ यहाँ से। जहाँ रहना है जैसे रहना है।

अब दूसरे हनुमान जी के जो बड़े भारी दुश्मन हैं, वो हैं- शराबी। जो लोग शराब पीते हैं, उनका लंका दहन करते हैं। यानि आप देखते हैं जो आदमी शराब पीते हैं, न कोई उनसे बात करेगा, न कुछ करेगा अच्छा वो दस शराबी इकट्ठे करके और शराब पिलाएंगे। अब सब शराब पी रहे हैं न उनके घर में खाने को है, न पीने को है, न ही कुछ, बस शराब पी रहे हैं पागल जैसे। जो लोग हनुमान जी को मानते हैं। वो शराब नहीं पी सकते, नहीं पी सकते। क्योंकि इधर से मानो तो उनको और करो उसके उल्टा, तो वो हो नहीं सकता। और आजकल मैं देखती हूँ कि शराब पीना बहुत बढ़ गया है। और मुझे आश्चर्य होता है कि एक बड़े अफसर साहब थे एक बार उनके घर मैं गई क्योंकि हमारे पति के वो दोस्त भी थे। और मियाँ-बीबी दोनों शराब पीते थे और बड़ी ठण्ड थी। तो मुझे कहने लगे आज रात यहीं ठहर जाओ। तो मैंने कहा अच्छा ठहर जाएंगे। तो पूरे घर में एक कम्बल, मैंने कहा, है भगवान! इतने बड़े अफसर के घर में एक कम्बल। मैंने कहा, मेरे को तो कोई बात नहीं मैं तो सो लूँगी। अब वो लोग परेशान हों कि एक कम्बल में इनको कहाँ सुलाएं। मैंने कहा मेरी चिन्ता मत करो, मैं ठीक कर लूँगी। इतना उनका हाल खराब। उनकी लड़की खराब गई लेकिन मानने को तैयार नहीं मेरी लड़की खराब गई। बस जैसे ही शराब पी लेंगे तो ये कहना शुरू करेंगे कि साहब मेरी लड़की सबसे अच्छी है, आप कुछ मत कहिए। वो लड़की का सत्यानाश हो गया है क्योंकि चढ़ गई शराब चढ़ गई तो होश ही नहीं उनको। उसका बिल्कुल सत्यानाश हो गया उस लड़की का। अन्त में अभी आई थी मेरे पास रोते हुए। बहुत

उसका सर्वनाश कर दिया। तो ये बात है कि, शराब का एक नशा, और नशे को भी बढ़ा देता है। और उसमें सबसे बड़ा नशा ये हो जाता है कि मनुष्य को प्रेम नहीं रह जाता है, तो किसी से प्यार नहीं करता। इसीलिए सबने, सारे धर्मों ने शराब को मना किया है। लेकिन अब इसाई धर्म जैसे है सब लोग उसमें तो कुछ न कुछ हिसाब किताब बना लेते हैं। हिन्दू धर्म में भी है, इसाईयों में भी, मुसलमानों में तो उन्होंने कहा कि जब ईसा मसीह किसी शादी में गए थे तो उस शादी में शराब बनाई गई थी, बिल्कुल झुठ, इसलिए हम लोग शराब पीते हैं। माने इंग्लैण्ड में तो मैं हैरान ही हो गई। कोई मरा तो शराब, कोई मर गया तो भी शराब पीएंगे, कोई पैदा हुआ तो भी शराब पीएंगे। तो वो जो आदत हो गई उन लोगों को, और शराब तो वहाँ बिल्कुल बड़ा भारी, एक संस्कृति सी बनी हुई है शराब की। किताबें लिखी हुई हैं। कौन सी शराब, कब पीना चाहिए, ऐसा नहीं वैसा नहीं, कैसा गिलास इस्तेमाल करना चाहिए। अभी इन शराबी लोगों का जो हाल मैंने देखा वो मैं सोचती हूँ ये आधे इन्सान हैं आधे बिल्कुल पगले हैं। पागल हैं। पर वो वहाँ संस्कृति बन गई। सबसे ज्यादा तो फ्रांस की तो संस्कृति बन गई। उनसे अपने को सीखने का कुछ नहीं। अब वो जो शराब की बात करते हैं तो ईसा-मसीह जब वहाँ गए तो उस वक्त में वो जगह, हिब्रू में मैंने पढ़ा हुआ है कि जो है द्राक्ष का रस पीते थे। माने अंगूर का रस पीते थे। तो उन्होंने पानी में हाथ डाल के उसमें अंगूर का रस बना दिया पानी का। शराब कभी सड़ाए गलाए बगैर बनती है क्या? दो मिनट में सहज में शराब बन सकती है क्या? जब तक आप शराब को खूब सड़ाइए नहीं और जितनी सड़ेगी उतनी महंगी। पचास साल सड़ी हुई हो तो और भी अच्छी और सौ साल हो तो बस दुर्लभ। ये शराब की ideas बना ली शराबियों ने और

शराबी लिखने वाले और शराबी ही कहने वाले। उनके शराबियों के लेक्चरों से न जाने कितने लोग बेवकूफ बनते हैं। पर किसी शराबी का मैंने किसी भी देश में पुतला खड़ा हुआ नहीं देखा। सो ये सब लोग श्री हनुमान के विरोध में नहीं हैं पर उनको attack करते हैं, उनको आक्रमण करते हैं। फिर वो भी दिखा देते हैं ऐसी गर्मी अन्दर कर देते हैं। पेट में कि फिर कैंसर, फलाना-ढिकाना। सब बीमारियाँ जब पियो और पियो, पियो। ये शराब पीने पिलाने की जो ये रस्म चल पड़ी है इसका मुझे तो डर लगता है कि ये हनुमान जी को संभाले रखी, न जाने क्या कर दें? कहाँ से क्या आफत कर दें? इनका क्या ठिकाना सारे शराबियों को एक दिन पकड़ के समुन्दर में न डाल दें। मुझे तो ये ही डर लगता है इनसे। क्योंकि इनमें दया है, भक्ति है, सब है पर जो इनके विरोध में खड़े हैं उनकी नहीं। जैसे श्री गणेश, दुष्चरित्र आदमी गुरु कोई हो कोई अगर चुरे वर्तन का आदमी हो तो उसके विरोध मूलाधार चक्र पर पड़ता है, जिसका चरित्र ठीक नहीं। पर इनकी बात और है ये जब किसी आदमी को देखते हैं कि वो अपनी चेतना से ही खेल रहा है। शराब पीने से चेतना हो नष्ट होती है। तो फिर उसके पीछे पड़ जाते हैं। घर में कलह होगा, झगड़े होंगे, मारा-मारी होगी। अब देखिए कि रस्ते पर मारा-मारी हो रही है, गुरु आप रास्ता रोकने जाएं तो दो शराबी आपस में मार रहे हैं। फिर उसकी हवा और फैलती है। तो किसी शराबी के घर किसी सहजयोगियों को जाना नहीं चाहिए क्योंकि वो अपवित्र जगह है और न ही किसी भी शराबी के साथ कोई सम्बन्ध रखना चाहिए। सहजयोगियों के लिए भी बड़ा घातक है क्योंकि इधर तो आप हनुमानजी को मानते हैं और उधर आप शराबियों के यहाँ जाते हैं। खास कर पूना में, न जाने कितने तरह के हनुमान जी यहाँ हैं- मारुति, कोई दुल्ला

मारुति, तो कोई वो मारुति, तो कोई वो मारुति। तो पुणे वालों के लिए तो बहुत बचकर रहना चाहिए। वो एक बार आए थे हनुमान जी वाले मेरे पास, कं माँ एक लैक्चर दो। मैंने कहा, मैं नहीं आऊंगी। कहने लगे क्यों? मैंने कहा आप शराब पीकर कं वहाँ गन्दे-गन्दे सिनेमा के गाने गाते हो और आपको मालूम है, ये मारुति क्या है? ऐसे गले घोटेंगे सबके, फिर पता चल जाएगा। तो उस गणपति के यहाँ आजकल मैंने सुना है कि शराब वराब पीने नहीं देते। कोई शराबी पीकर आता है तो उसको भगा देते हैं। आप सोचो कि हिम्मत देखिए कि हनुमान जी के सामने ही जाकर कं और ये धंधे करना हनुमान जी के सामने। क्या हिम्मत है! और ये सब कुछ करने से लोग सोचते हैं कि पैसा आता है। इसका जो धंधा करते हैं और जो पीते हैं, इसके जो ग्राहक हैं, सब इसी तरह से बिल्कुल बेकार Bankrupt, एक पैसा नहीं। अब लोग कहेंगे कि शराब में ऐसा क्या है, क्योंकि ये हनुमान जी का मामला है भई, इसका क्या कारण दें। हनुमान जी के विरोध में तुम जा रहे हो। उनकी शक्ति आपके अन्दर High Side से बहती है। उसको इस्तेमाल करो सन्तुलन के साथ बजाय इसके आप शराब पीते हो, अपना लीवर खराब करो, फिर ये खराब करो, फिर वो खराब करो तो वो तो उखड़ेंगे ही। माने सूक्ष्म में यह हनुमान जी का काम है, बाह्य ताल्लुक नहीं समझते। बाह्यता तो ये हालत है कि कहीं गुर शराब के विरोध में कुछ कहो तो, तो लोग मारने को दौड़ेंगे आपको। अगर आप नहीं पीते तो कहेंगे क्या बेवकूफ हो? आप शराब न पीते हो। अरे, बाबा उसके पीछे में इतने बड़े हनुमान जी खड़े हुए हैं। एक बार भी इसका प्रहार किया तो गए आप जिन्दगी से गए। मेरे ख्याल से पहले ही प्रहार करते नहीं तो लोग ऐसे पागल जैसे कैसे बातें करते। वोही वोही बात करेंगे, वोही वोही बात एकदम और सब पागल।

सब पाटी हो रही और ये होगा और सब पागल लोग वहाँ। फिर शादियों में, बारातियों में सब में चलता है।

अब जो इन्सान कार्य करता है बहुत आगे की सोचता है और बहुत विचारक है, सब है, पर प्रेम नहीं है। सबके प्रति प्रेम की भावना नहीं है। उसको भी इसको तकलीफ होती है। क्योंकि राम की भक्ति करने वाले इस हनुमान जी का कोई ठिकाना नहीं है। गुर आप बड़े कार्यकर्ता है, बहुत बढ़िया आदमी हैं, सब कुछ है लेकिन आपको सबके प्रति प्रेम नहीं है। चलने नहीं वाला। सबके प्रति प्रेम रखना और इसलिए ईसा मसीह ने कहा है कि सबको माफ करिए। आप कौन होते हैं माफ न करने वाले? जहाँ गर्मी हुई लोगों की खोपड़ी खराब हो जाती है और प्यार का मज्जा टूट जाता है। ऐसे हनुमान भक्त श्री बजरंग बली को सबको नमस्कार करना चाहिए और समझना चाहिए हमारे अन्दर जो भी सहजयोग से शक्तियाँ आई हैं उसको सन्तुलन में रखें। प्यार ऐसी चीज है कि आप बड़े-बड़े लोगों को प्यार के बन्धन में फँसा लो। हम तो यही करते रहते हैं क्योंकि अजीब-अजीब लोगों से पाला पड़ता है। अब उनपर ऐसे प्यार का चक्कर चलाओ की वो ठिकाने आ जाए। एक बार हम गए थे कहीं, तो वहाँ एक साधू बाबा बड़े मशहूर लेकिन गुस्से के तेज, ये लोग सब गुस्से के तेज बहुत होते हैं तो हम चढ़के ऊपर गए तो वो गुस्से में यूँ, यूँ, यूँ, यूँ, गर्दन कर रहे थे क्योंकि उनको ये अहंकार था कि वो बरसात को रोक सकते हैं। और मैं जो ऊपर गई चढ़ते-चढ़ते ऊपर पहुँची तो बिल्कुल भीग गई बरसात में। अब ये बहुत गुस्से होकर बैठे थे। तो मैं जाकर उनकी गुफा में बैठी तो वो आकर बैठ गए। बहुत गुस्से हुए तो मैंने कहा ऐसा क्या हो गया, भीग गए तो क्या हो गया। नहीं कहने लगे आपने मेरा अहंकार निकालने के लिए ही बरसते

पानी को रोका नहीं, क्योंकि मैं तो रोक सकता हूँ। मेरे ये अहंकार हो गया था। ऐसी कोई बात नहीं। मैंने कहा देखो तुम सन्यासी हो और तुमने मेरे लिए एक साड़ी खरीदी है। मैं सन्यासी से तो कुछ ले नहीं सकती, ले नहीं सकती और तुम मुझे कुछ दे नहीं सकते। तब मैंने सोचा, कि भीग जाओ तो लेना ही पड़ेगा। उस चीज से उनके आँख से आँसू बहने लग गए। मेरे पैर पर गिर पड़े। मैंने कहा मुझको क्या करना था मुझको तो सिर्फ थोड़ा सा भीगना ही था। नहीं तो मैं भी नहीं लेने वाली थी। पर मैंने कहा, थोड़ा भीग जाओ तो फिर लेना पड़ेगा-साड़ी। तो कहने लगे कि अच्छा मैंने कहा कि तुमने मेरे लिए भगुवे रंग की साड़ी ली है और नौवार। ये अच्छा किया क्योंकि इसमें तो पेटिकोट भी भीग गया तो नौवार मैं पहन सकती हूँ। बहुत एकदम उनको तबियत खुश हो गई। तो ये प्यार ऐसी चीज है कि बड़े-बड़े गुस्से वालों को ज़मोन पर उतार लाती है और पहले के अनेक ऐसे उदाहरण हैं। वो जो बताने बैठू तो रात पूरी ऐसे बीत जाएगी। पर अब भी हर दिन हो रहा है। प्यार से बात करो। उसमें क्या जाता है। गुरु आप प्यार करोगे तो दूसरों के सद्गुण आपके अन्दर आएंगे और गुरु आप किसी से नफरत करोगे उसी से उसके जो दुर्गुण हैं वो आपके अन्दर आ जाएंगे। लेन देन का मामला है। आपने किसी से ये ऐसा वो ऐसा जो देखो कोई ठीक नहीं ऐसे बहुतों के यहाँ रिवाज है, संस्कृति है कि कोई घर में आया, बैठा खाओ पीयो, ठीक

है। हाँ हाँ हाँ हाँ सब हुआ। जैसे ही गया- ये ऐसा खराब आदमी है। फिर दूसरा आया वो बैठा खास कर औरतों में बहुत होता है। ये तो आके बैठा हाँ हाँ बड़े अच्छे हैं, बड़े अच्छे हैं, हाँ जाओ जाओ। हाँ ये ऐसा आदमी है। अरे भई, ऐसे ऊपरी प्यार से तो नहीं हो सकता न। गुरु तुम इस तरह से ऊपरी प्यार किसी से करोगे, तो वो क्या समझता नहीं है क्या? प्यार अन्दर से करने की शक्ति आपको प्राप्त है क्योंकि आप सहजयोगी हैं। और जब ये चीज को आप आत्मसात करोगे। अपने आप, जब प्यार का पेड़ खिलेगा तो आप दूसरों को आनन्द दोगे और उसकी खुशबू आपको भी आएगी। प्यार के सागर के सिवाए और कोई चीज आपको अच्छी नहीं लगेगी। इसलिए बजरंग बली से जो चीज सीखने की है वो है, उनकी भक्ति और वो शक्ति जो उन्होंने आपको दी है कि आपको कोई हाथ नहीं लगा सकता गुरु आपकी भक्ति सच्ची है। कोई हाथ नहीं लगा सकता। ऐसे हजारों उदाहरण सहजयोग में हैं। चमत्कार उसको लोग कहते हैं। मैं कहती हूँ, नहीं ये तो श्री हनुमानजी की कृपा है। तो आप सबको अब मैं अनन्त आशीर्वाद और प्यार कहती हूँ। पहले अपने को भी प्यार करो, दूसरों को भी प्यार करो। इसका मतलब नहीं मेरा बेटा, मेरी ये, नहीं नहीं। इसका मतलब है निर्वाण्य प्यार। प्यार जिसका कोई बदला नहीं, जिसका कोई रिश्ता नहीं। जो अगाध है। ऐसी प्यार की शक्ति आपके अन्दर आई है, उसको आप इस्तेमाल करें। अनन्त आशीर्वाद।

MARATHI TRANSLATION

(Hindi Talk)

Scanned from Marathi Chaitanya Lahari

सारांश (Excerpt)

आज श्री हनुमान, बजरंगबली पूजेसाठी आपण इथे जमलो आहोत. सहजयोग्यांसाठी श्री हनुमान हे एक आदर्श आहेत. ते आपल्या पूर्ण उजव्या बाजूवर कार्य करत असतात. तेच तुम्हाला जरूर ते मार्गदर्शन करतात, सदैव विवेक देतात, मदत करतात आणि तुमच्या संरक्षणाची काळजी घेतात, तसेच तुमच्या अहंकारावर नियंत्रण ठेवतात. पण त्याहीपेक्षा महत्वाचे म्हणजे ते तुम्हाला गुरुविषयी समर्पणाची शक्ति देतात. ते श्रीरामांचे एकनिष्ठ सेवक होतेच पण महत्वाची गोष्ट म्हणजे ते श्रीरामांसमोर पूर्णतया समर्पित होते. ही समर्पणाची प्रेरणा व शक्ति तेच तुम्हाला पुरवतात.

गुरु-महिमा आहेच पण त्याचबरोबर गुरुची शक्तिपण आली. शक्ति आणि भक्ति वेगवेगळी असूच शकत नाही, आपण म्हणू शकतो की उजव्या हातात शक्ति आहे तर डाव्या हाताकडून भक्ति येणारच. हा शक्ति-भक्तीचा संगम हनुमानामध्ये अपूर्वपणे दिसून येतो. लंकेमध्ये सीतादेवींना श्रीरामाचा निरोप देऊन ते भेटले तेव्हा त्यांना तिची सहज सुटका करता आली असती, पण सीतेनेच त्याला सांगितले "तू माझ्या मुलासारखा आहेस आणि पती म्हणून श्रीरामांनी रावणाला ठार करून माझी सुटका करणे योग्य आहे." श्रीराम स्वतः अत्यंत शक्तिशाली होते, अचूकपणे लक्षावर बाण मारण्यात त्यांचा कुणी हात धरू शकला नाही. नंतर महामयंकर असे राम-रावण युद्ध झाले आणि त्यात रावण मारला गेला. तुलसीदासांनी त्याचे वर्णन करताना एक फार सुंदर घटना सांगितली आहे, युद्धाच्या शेवटी-शेवटी राम-रावण समोरासमोर आल्यावर श्रीराम रावणाचे गळ्यावर बाण मारून त्याचे मुंडके उडवायचे पण तेच मुंडके परत घडावर येऊन बसायचे, असे अनेक वेळा झाले, तेव्हा लक्ष्मणाने रावणाच्या हृदयावर बाण मारा असे रागाला सांगितले. तेव्हा श्रीराम म्हणाले, "त्याच्या हृदयात सीता आहे, सारखे डोके उडवल्यावर रावणाचे चित्त हृदयातून मस्तकाकडे जाईल आणि मग मी त्याच्या हृदयावर बाण सोडेंन." या म्हणण्यातील श्रीरामांचा संकोच व सरलता लक्षात घ्या.

हनुमानांनी आपल्या अनेक कामगिरींमधून हेहि दाखवून दिले आहे की ते एक प्रेमाच्या सागरासारखे व्यक्तिमत्त्व होते. त्याचबरोबर जे राक्षसी दृष्ट प्रवृत्तीचे लोक होते, ज्यांचे एकमेव ध्येय हे इतरांना छळण्याचे वा त्रास देण्याचे होते, अशा लोकांना ठार मारण्यात त्यांना जराही संकोच नव्हता, त्यांच्यामधील हा शक्ति व भक्तीचा संगम पाहण्यासारखा आहे. रावणाला फक्त अग्नीचे मय वाटायचे हे त्यांना माहित होते म्हणून त्यांनी लंकेत जाऊन लंकादहन केले; त्यामध्ये कुणालाही, अगदी रावणालाही शारीरिक इजा झाली नाही पण त्याच्या शक्तिपुढे सर्वजण भयभीत झाले; सर्व लोकांना रावणाच्या दुष्कृत्यांबद्दल काही वाटत नव्हते ते आता लंकादहन पाहून धावतून गेले, रावण हा महापापी राक्षस आहे हे त्यांना समजून चुकले. यातून या बजरंगबलीजवळ केवडी समज व संतुलन होते हे लक्षात घेतले पाहिजे. शक्तिशाली माणसांनी असेच संयमी असले पाहिजे. शिवाजीमहाराजही असेच होते. असे संतुलन तुम्ही मिळवले की तुम्ही खऱ्या अर्थाने सहजयोगी झालात असे मी म्हणेंन; तुमच्याजवळ शक्ति आली याचा अर्थ हा नाही की तुम्ही प्रेम, संयम या गोष्टींना विसरून जा. उलट तुमची शक्ति दीन-दुबळ्यांसाठी, पीडित लोकांसाठी, दुःखी लोकांसाठी वापरून त्यांचे त्रास कमी करण्यासाठी वापरली पाहिजे, आणि त्यांना असे त्रास देणाऱ्या लोकांना ठीक केले पाहिजे. तुमच्या नुसत्या बंधनातूनही हे घडून येईल. तुम्हाला जी शक्ति मिळाली आहे तिचा उपयोग दुष्टांचे (Evil) पारिपत्य करण्यासाठी करायचा आहे आणि त्यासाठी तलवार किंवा गदा न वापरता फक्त बंधन घालून ते होणार आहे; त्यामध्येच गदा आहे व त्याचा प्रहार होणार आहे. तुम्हालाच याचे अनुभव येतील. अशा तऱ्हेने तुमचे संरक्षण सदैव होणार आहे, सगळ्या सहजयोग्यांचेही संरक्षण होईल. या कार्यामध्ये बजरंगबली फार तत्पर आहेत, त्यांचे हात फार जबरदस्त आहेत. तुमच्या मागे-पुढे ते सदैव आहेत पण हे तुम्हाला समजणार नाही अशा तऱ्हेने होते. तसे स्वभावाने ते लहान मुलासारखे सरळ व

निर्मळ आहेतच पण त्याचबरोबर समझदार व युक्तिशाली आहेत, त्याचप्रमाणे शक्तिबरोबर त्यांच्याजवळ नीर-क्षीर विवेकही आहे हे महत्त्वाचे. ते बुद्धीमानही आहेत, लौकिक व्यवहारांतील बुद्धि नाही तर प्रेमाचे अधिष्ठान असलेली बुद्धि, त्या प्रेमाधूनच त्यांना सर्व काही समजते. या विशेष बुद्धीचे स्वरूप श्रीगणेश व श्री हनुमानच दाखवून देतात. तसे पाहिले तर हनुमान फार चपळ, तेजस्वी आणि बलशाली तर श्रीगणेश शांत स्वभावाचे. पण वेळ आली की दोघेही खूप संहारक आहेत. म्हणून तुम्हाला स्वतःला दुष्टांचा संहार करण्याची जरूर नाही; कारण हे दोघेजण त्यासाठीच तुमच्यामागे सदैव लक्ष ठेऊन असतात. म्हणून तुम्हाला जे कोणी त्रास देणारे भेटतील त्यांच्यापासून हे दोघेही तुमचे रक्षण करणार आहेत हे ध्यानात ठेवा. मोठेमोठे पुढारी, मंत्री यांच्याबरोबर अंगरक्षकांचा ताफा असतो पण हे सतत तुमच्याबरोबरच राहतात. सहजयोग्यांची सुरक्षा-व्यवस्था त्यांच्याबरोबरच असते. याशिवाय तुमच्या सुरक्षा-व्यवस्थेमध्ये गणांचे कार्य महत्त्वाचे आहे; गणांचे कार्य श्रीगणेश नियंत्रित करतात म्हणूनच त्यांना 'गणपति' म्हणतात. तुमच्याबद्दलची सर्व माहिती, तुम्ही जे काही करता किंवा मनात आणता ती सर्व माहिती ह्या गणांकडून श्रीगणेशाकडे पोचवली जाते. कुठे काय गडबड चालली आहे, तुम्हाला कोण त्रास देत आहे, तुमच्या कार्यामध्ये कोण काय अडथळे व अडचणी आणत आहेत, तुमच्या नकळतही कोण तुमच्याविरोधी कार्य करत आहे हीहि सर्व माहिती गणांकडून पोहचवली जाते आणि त्यानुसार या दोन्ही देवता तुमचा संभाळ सर्वकाळ करत असतात. श्रीगणेशाच्या आज्ञेनुसार श्री हनुमानही सज्ज राहतात. म्हणून सहजयोग्यांना कसल्याही बाबतीत भीती वाटण्याची जरूर नाही. नुकतीच घडलेली एक गोष्ट उदाहरण म्हणून सांगते. अमेरिका आजकाल



हनुमान पूजा १९९९ (पुणे)

आक्रमकपणाच्या प्रवृत्तीमधून बाहेरच्या देशांवर बॉम्ब हल्ले करण्यात सरसावली आहे. आफ्रिकेमधील एका ठिकाणी असाच बॉम्ब हल्ला झाला, त्या ठिकाणी काही सहजयोगी पण होते; आणि आश्चर्य म्हणजे त्या सहजयोग्यांशिवाय त्या ठिकाणचे इतर सर्व लोक बॉम्ब हल्ल्यात ठार झाले; हे सर्वच्या सर्व सहजयोगी पूर्णपणे बचावले. लगेच पुढच्या पूजेला ते सर्वजण कबेल्याला आले आणि त्यांनी मला ही हकीगत सांगितली. मी त्यांना समजावले की सहजयोग्यामधून आत्मा प्रकाशात आल्यामुळे त्यांच्यात परिवर्तन होऊन ते शक्तिशाली. महान पुरुष झाल्यामुळे त्यांना संरक्षण मिळाले. अशी हजारो उदाहरणे मी देऊ शकेन. आपल्याकडे अशा अनेक साधु-संतांचा छळ झाला तरी त्यांचे असेच रक्षण केले गेले. म्हणून त्यांनी चुकीच्या गोष्टींबद्दल राजा-महाराजांनाही सुनावण्यास कमी केले नाही. पण हनुमान त्यांच्या पाठीशी असल्यामुळे त्यांचे कुणीही काहीही बिघडवू शकले नाही. खाजानिमुद्दीनची गोष्टही तुम्हाला माहित आहे. बादशहापुढे कुर्मिसात न केल्यास त्यांना ठार मारण्याची धमकी देऊनही ते पाबरले नाहीत, आणि कुर्मिसात करायला नकार दिला, पण त्या बादशहाचीच कत्तल झाली. असे संरक्षण मिळाले नसते तर पृथ्वीवरचे बडे-बडे साधुसंत वा धर्मवीर केव्हाच प्राणास मुकले असते. कारण माणसांमधील राक्षसी प्रवृत्ती इतकी बळकट, व्यापक असते की एरवी अशा संतांचा नाश करणे काही कठीण काम नव्हते. पण परमात्मा असे होऊ देणार नाही कारण

त्यांच्याजवळ श्रीगणेश व श्री हनुमान अशा दोन प्रचंड शक्ति आहेत.

राणा प्रताप एवढा महावीर; युद्धामध्ये अपयश आल्यावर त्याचे सरदार त्याला माघार घेऊन पळून जायचा सल्ला देऊ लागले तेव्हा त्यानेही त्यांना पळून जायची परवानगी दिली पण स्वतः लढत राहण्याचा निर्धार व्यक्त केला; कारण तो सांगयाचा की गण

त्याच्याबरोबर आहेत. तसेच तुमचे संरक्षण, सर्व काळी व सर्व स्थळी केले जाणार आहे. एवढे संरक्षण मिळाल्यावर सहजयोगी धीर-गंभीर, कुणालाही न घाबरणारा, आपल्या स्थानी ठामपणे उभा राहणारा असा बनला पाहिजे, त्याला प्रत्यक्ष काही करण्याची जरूरी उरणार नाही. अशा तऱ्हेचे अनेक अनुभव सहजयोग्यांना मिळत असतात. एरवी पाश्चात्य लोकांमध्ये सहजयोग पसरवणे फार कठीण, पण तेहि सहज घडून आलेले तुम्ही पाहात आहात; एवढेच नव्हे तर मुसलमान लोकही आता सहजयोगात आले आहेत. यावरून हेच दिसून येते की परमात्म्याची प्रेमशक्ति खूप शक्तिशाली आहे; व कार्यान्वित आहे. पण त्यासाठी श्रीगणेशांचा किंवा हनुमानांचा जप करण्याची, त्यांच्या नावाने संस्था स्थापन करण्याची जरूरी नाही. तुमचे संरक्षण करणारी संस्था तुम्हीच आहात. तुम्हाला कोणी हात लावणार नाही वा ठार मारू शकणार नाही. तुम्हा फक्त स्वतःला नीट समजण्याची व जाणण्याची आवश्यकता आहे. आत्मसाक्षात्काराचा अर्थच हा आहे की 'स्व' ला जाणणे, ओळखणे, म्हणजेच आपल्या मागे-पुढे कोण-कोण आहेत हे जाणणे. मग ही परमेश्वरी प्रेम-शक्ति तुमच्यामधून कार्यान्वित होते; दुसऱ्यांना आपण कसे ठीक करून शकू. त्यांना काय मदत करू शकू. ह्याचा तुम्ही जास्त-जास्त विचार करू लागता- 'आनंदे भरीन तीन्हि लोक' हे भजन तुम्ही काल ऐकलेत- आणि अशी भावना आल्यावर हेहि लक्षात ठेवा की तुम्हाला कुणीही काहीही त्रास देऊ शकणार नाही; कुणाला तशी हिम्मत होणार नाही कारण तुम्ही इतके शक्तिशाली आहात.

आज आपण हनुमानांची पूजा करताना हेच मान ठेवले पाहिजे की साक्षात हनुमान आपल्यामध्ये प्रस्थापित झाले आहेत. ते तुमच्या उजव्या बाजूवर म्हणजे पिंगला नाडीवर कार्य करतात. त्यामुळे आपल्याला कार्य करण्याचा जोष मिळतो, अर्थात त्यापासून उष्णतेबरोबरच आपल्यामध्ये ते भक्ति निर्माण करतात. ज्यावेळेस उजव्या बाजूने जोषामधून कार्य करता करता आपण श्री हनुमानांसारखे संतुलन मिळवत नाही त्याच्या परिणामांतून अनेक आजार निर्माण होतात. दमा, हृदयविकार, लीव्हरचे त्रास त्यामुळे सुरु होतात. हनुमान ही उष्णता नियंत्रित करत असतात पण आपल्याच घुकांमुळे ही उष्णता आणखी पसरत गेली तर ब्लड-कॅन्सरसारखे आजार होतात. म्हणजे हनुमानांविरुद्ध वागल्यामुळे लीव्हर प्रथम

उष्णतेमुळे खराब होते व त्यांतून पुढे अनेक प्रकारचे आजार पैदा होतात. उदा. राग आला की आरडा-ओरडा, मार-पीट याच्यामागे लागणे हे हनुमानांच्या विरोधात आहे, तुम्ही हनुमानांना मानता तर राग येण्याचा, नाराज होण्याचा प्रश्नच कुठे येतो, ते कधी कुणावर रागवत नाहीत, पण माणूस अहंकारामुळे रागवत राहतो, हनुमानांजवळ अहंकाराचे नावही नाही. उजव्या बाजूच्या लोकांमध्ये अहंकार फार असतो. खरे पाहिले तर सर्व-साधारण माणसांना, तसेच मोठमोठ्या लोकांना अहंकार येण्याचे कारण म्हणजे त्यांची आंतरिक स्थितीच अशी असते की ते हनुमानांना मानू शकत नाही. तुम्ही हनुमानांना मानता तेव्हा श्रीरामांनाही मानणारच. आता एखादा माणूस उजव्या बाजूकडचा असला तरी त्याला दम्याचा त्रास व्हायला नको कारण उजव्या हृदयातच श्रीरामांचे स्थान आहे. पण तुम्ही श्रीहनुमानांना मानत नसाल तर तुम्हाला दम्याचा विकार होण्याची फार शक्यता असते. तसेच डाव्या हृदयात श्री शिवांचे स्थान आहे आणि तिथे काही अयोग्य प्रकार झाले तर हृदयविकार होऊ शकतो.

सहजयोगात आल्यावर तुम्ही समजून घेतले पाहिजे की श्रीहनुमान हे तुमचे आदर्श बनले पाहिजेत. श्रीगणेश, अवोधिततेचे अवतार असतातच; लहान मुलासारखे पण तल्लख बुद्धीचे असतात. पण श्री हनुमानांजवळ संतुलन आहे, प्रेममय आनंद आहे तसेच ते महाशक्तिशाली आहेत. त्यांच्यासारखे संतुलित जीवन-चरित्र प्रत्येक सहजयोग्याचे झाले पाहिजे. तुम्हाला जरी राग आला तरी चूप बसून रहा. मला राग असा कधी येत नाही किंवा आला तरी समजत नाही. पण राग न दाखवताही कधी कधी कार्य घडून येते. पण नुसता राग प्रमाणाबाहेर होऊ लागला की गोष्ट गंभीर होते, त्यांतून अल्झायमर नावाचा फार गंभीर आजार उद्भवतो. गुस्सा करणे ही एक अतिशय वाईट प्रवृत्ति आहे; राग आला तर आपणच आपल्याला तापसून पहावे की एवढा राग येण्यासारखी ती गोष्ट आहे का? समजा, तुमच्या मुलाला कुणी मारले तर रागावण्याऐवजी आपलाच मुलगा घुकला नसेल ना असे आधी पहा. त्यामुळेच आपण संतुलन गमावून बसता व हा आजार होतो. अल्झायमर सहजयोगामधून ठीक होऊ शकतो पण ते करणे फार कठीण आहे; कारण असा आजारी माणूस संतुलन गमावलेला असतो, शिवीगाळ सतत करत असतो, आरडा-ओरडा करत असतो. अशा माणसाला

कसे ठीक करणार ?

हनुमानांचा दुसरा एक शत्रू म्हणजे शराबी, दारू पिणारा, दारू पिणाऱ्यांचे ते लंकादहन करवतात. एरवी दारूड्या माणसाबरोबर कुणी बोलत नाही, म्हणून आपल्यासारखे आणखी दारूडे जमवून तो पीतच राहतो. घराकडे लक्ष नाही, घरच्या लोकांना खायला नाही आणि हे सारा पैसा दारूमध्ये उडवणार. हनुमानांना मानणारा माणूस कधीही दारूला स्पर्श करणार नाही. आजकाल तर मद्यसेवन ही फॅशन बनत आहे. दारूच्या अतिरेकामधून साऱ्या कुटुंबाचा सत्यानाश होतो, अशी कुटुंबे मी बरीच पाहिली आहेत. त्याचा आणखी एक वाईट परिणाम म्हणजे माणसामधील प्रेम-भावना शुष्क बनून रहाते. म्हणून सर्व धर्मांमध्ये मद्यमान निषिद्ध मानले गेले आहे. पण ख्रिश्चन लोकांनी त्यातूनही पळवाट काढली आणि सांगू लागले की ख्रिस्तांनीही एका लग्नसोहळ्यात पाण्याची दारू बनवली आणि सर्वांना दिली. ही शब्दशः खोटी गोष्ट आहे. इंग्लंडमध्ये तर मी पाहिले की घरात कुणाचा मृत्यु झाला तरी शराब वा नवीन जन्म झाला तरी शराब पिऊन साजरा करणार. शराबी लोकांच्या डोव्यातून निघलेल्या या अफलातून कहाण्या आहेत. असे लोक हनुमानांच्या नुसत्या विरोधात आहेत असे नसून ते त्यांच्यावरच आक्रमण करणारे आहेत. म्हणून त्यांच्यावर हनुमानांचा केव्हा व केव्हा कोप होईल मलाच माहीत नाही. त्याचप्रमाणे श्रीगणेशांच्या विरोधात असणाऱ्या, चरित्रहीन माणसांचे मूलाधार चक्र फार खराब होते. शराब प्यायल्यामुळे माणसांची चेतना नष्ट होते व श्री हनुमान अशा माणसांच्या मागे लागतात, मग त्यांच्या कुटुंबात कलह होतात, शिवीगाळ, मारामारी चालते. सहजयोग्याने तर दारू पिणाऱ्या माणसाच्या घरात पाऊलही टाकू नये, कारण ते स्थान अपवित्र असते, तसेच शराब पिणाऱ्या माणसाशी काहीही संबंध ठेऊ नयेत. त्यांच्यासाठी हे करणे घातक आहे.

पुण्यामध्ये जुल्या मारुती, जिलव्या मारुती इ. अनेक नावांची मारुती-मंदिरे आहेत. म्हणून पुणेकरांनी तर फार सावध रहायला हवे. त्या ठिकाणचे लोकही नशा-नाचगाणी असे प्रकार चालवतात. याला काय म्हणायचे? हनुमानांची शक्ति तुमच्या उजव्या बाजूमध्ये आहे. संतुलनात राहून तुम्हाला त्याचा उपयोग करायचा आहे. शराब पिऊन लिव्हर खराब झाल्यावर ते कोपाविष्ट होणारच. त्याचे कार्य सूक्ष्मतेतून होणारे आहे. दारू पिणाऱ्यांना तुम्ही बोलून काही

फायदा नाही, उलट तेच तुमच्यावर उलटतील. दारू पीत नाही म्हणून तुम्हालाच नावे ठेवतील. हनुमानांनी या लोकांवर आधीच गदाप्रहार कसा केला नाही याचेच मला आश्चर्य वाटते.

जो माणूस खूप कार्य करतो, खूप धावपळ करतो पण ज्याच्या हृदयात प्रेम नसते त्याला पण त्रास होऊ शकतात. म्हणून तर येशू ख्रिस्तांनी सर्वांना क्षमा करत रहा असा उपदेश केला. हनुमान तर त्यांच्या भक्तीच्या शक्तिमधून इतक्या उच्च स्थानावर आले, तेच आता तुमचे आदर्श आहेत. गरमी झाली की लोकांची खोपडी खराब होते व प्रेमाचा आनंद मिळनासा होतो. अशा हनुमान भक्तांना बजरंगबली नमस्कार करतात. म्हणून सर्व सहजयोग्यांनी समजून घेतले पाहिजे की, हनुमानांची शक्ति मिळवण्यासाठी सर्वप्रथम संतुलन जपले पाहिजे. प्रेमाचे बंधन असे असते की तिथे लहान-मोठा, सामान्य-श्रेष्ठ असे भेदभाव रहात नाहीत, ते बंधन सर्वांना सामावून घेते. मी तर त्याचाच सदैव वापर करते कारण माझा कधी कधी विचित्र लोकांबरोबरही संबंध येतो, त्यांना प्रेमाच्या मोहिनीमधूनच संभाळून घ्यावे लागते. गगनगिरी महाराजांची गोष्ट तुम्हाला मी सांगितलीच आहे आणि या प्रेमामधूनच त्यांचा अहंकार मी शांत केला. अशी अनेक उदाहरणे आहेत, ती सर्व सांगत बसले तर रात्र पुरणार नाही. प्रेमळ शब्दांतून संभाषण करायला काही लागत नाही; दुसऱ्याशी प्रेमाने वागल्यास त्या व्यक्तीचे सद्गुण तुम्ही उचलू शकता; उलट रागारागांत बोलल्यास त्याचे दुर्गुणच तुमच्यामध्ये उतरतात. तुम्ही सहजयोगी झाल्यावर प्रेम करण्याची शक्ति तुम्हाला मिळाली आहे. प्रेमाची देवाण-घेवाण झाल्यावरच त्याचा सुगंध तुम्हाला मिळणार आहे.

बजरंगबलीपासून तुम्हाला काही मिळवायचे असेल तर ते म्हणजे त्यांची भक्ति; ह्या भक्तीमधूनच तुम्हाला त्यांची शक्ति मिळणार आहे व ती मिळाल्यावर कुणीही तुम्हाला धक्का देऊ शकणार नाही, याची अनेक उदाहरणे आहेत. त्यांना लोक चमत्कार समजतात पण मी त्याला हनुमानांची कृपा समजते. म्हणून पहिले स्वतःबद्दल प्रेम बाळगा व तेच प्रेम दुसऱ्यांना द्या. हे प्रेम म्हणजे निर्व्याज प्रेम. या प्रेमाच्या शक्तिचाच तुम्ही सतत उपयोग करा.

तुम्हा सर्वांना अनंत आशीर्वाद.